

Notes by : DR. RAM LOCHAN MISHRA

(Associate professor)

Head of Department

JANTA KOSHI COLLEGE BIRAUUL DARBHANGA

B. Com part -1 paper-1 Financial Accounting

Unit-2 Branch Account

**शाखा खाते Branch Account**

**Meaning :** आधुनिक व्यावसायिक युग में व्यवसाय का आकर बड रहा है | ऐसे में अपने व्यवसाय का विस्तार करने के लिये व्यावसायिक संस्थाने विभिन्न स्थानों पर अपनी शाखाये खोलकर मॉल की बिक्री करती है इन शाखाओं का नियंत्रण एक मुख्य कार्यालय द्वारा किया जाता है मुख्य कार्यालय अपनी शाखाओं को मॉल की पूर्ति करता है तथा उनके सभी क्रियाकलापों पर नियंत्रण रखता है मुख्य कार्यालय को अपनी प्रत्येक शाखा का लाभ हानि ज्ञात करना होता है इसके लिये मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में जो खाते बनाए जाते हैं उन्हें शाखा खाते कहते हैं |

## शाखा खाते के उद्देश्य Objectives of Branch Account

1. बिक्री में वृद्धि (Increase in Sales) – मुख्य कार्यालय द्वारा जो शाखाएँ खोली जाती हैं, उनका उद्देश्य व्यवसाय की बिक्री बढ़ाना होता है शाखा खातों की सहायता से शाखा की कुल बिक्री का ज्ञान होता है, जिससे उसमें वृद्धि की योजनाएँ तैयार की जाती हैं
2. शाखाओं का नियंत्रण (Control on Branches) – शाखाओं की गतिविधियों पर मुख्य कार्यालय का नियंत्रण आवश्यक होता है शाखा खाते से शाखा की कार्यशील स्थिति का ज्ञान होता है इसमें शाखा की प्रगति का अनुमान लगाया जा सकता है इस प्रकार कम प्रगति करने वाली शाखाओं की चिन्हित करके उनकी कार्य छमता में वृद्धि के उपाय किए जा सकते हैं ।
3. शाखाओं की माल की आवश्यकता का ज्ञान (Knowledge of Need Goods at Branch) – शाखा खाते तैयार करने से मुख्य कार्यालय को इस बात का अनुमान रहता है की किस शाखा को किस समय कितना माल की आवश्यकता है इससे शाखाओं को कभी भी माल की कमी की समस्या उत्पन्न नहीं होती है ।

4. शाखाओं के लाभ-हानि की गणना (Calculation of Profit and loss of Branch) – मुख्य कार्यालय अपनी शाखायें के लाभ- हानि ज्ञात करना चाहता है शाखा खता तैयार करके के वित्तीय वर्ष के अंत में अपनी शाखा की लाभार्जन स्थिति ज्ञात कर सकता है ।
5. लेखांकन की अनिवार्यता (Compulsory Accounting) – Companies Act 1956, के अनुसार मुख्य कार्यालय द्वारा शाखाओं के लेखे रखना तथा अंकेक्षण कराना वैधानिक रूप से अनिवार्य है

### शाखाओं के प्रकार Types of Branches

- **आश्रित शाखायें (Dependent Branches)** – ऐसी शाखायें जो पूर्ण रूप से मुख्य कार्यालय पर निर्भर होती हैं आश्रित शाखायें कहलाती हैं सामान्यतः ऐसी शाखायें को माल की पूर्ति मुख्य कार्यालय द्वारा की जाती है तथा व्ययों का भुगतान भी मुख्य कार्यालय द्वारा किया जाता है ऐसी शाखाओं की लेखांकन प्रक्रिया मुख्य कार्यालय द्वारा की जाती है शाखा अपने व्यवहारों के सभी विवरण मुख्य कार्यालय को प्रेषित करती है ।

- **स्वतन्त्र शाखाये (Independent Branches)** – ऐसी शाखाये जिन्हें आवश्यकता पड़ने पर स्वयं माल क्रय करने तथा अपने व्ययों का भुगतान करने का अधिकार होता है स्वतन्त्र शाखाये कहलाती हैं ये शाखाये अपने लेन-देनों का हिसाब-किताब स्वयं रखती हैं तथा वित्तीय वर्ष के अन्त में अपना तलपट मुख्य कार्यालय को भेजती हैं ।
- **विदेशी शाखाये (Foreign Branches)** – ऐसी शाखाये जो दूसरे देशों में खोली जाती हैं विदेशी शाखाये कहलाती हैं ये शाखाये आश्रित अथवा स्वतन्त्र दोनों प्रकार की हो सकती हैं ये शाखाये विदेशी मुद्रा में अपना तलपट बनाकर मुख्य कार्यालय को भेजती हैं जिसे मुख्य कार्यालय अपने देश की मुद्रा में परिवर्तित करता है ।

**आश्रित शाखाओं की लेखा प्रणाली (Accounting System of dependent Branches)**

आश्रित शाखाओं के लेखे रखने के लिए निम्न में से किसी भी विधि का चयन किया जा सकता है -

- |                           |                     |
|---------------------------|---------------------|
| 1. साधारण विधि            | 3 .अन्तिम खाते विधि |
| 2. रहतिया एवं देनदार विधि | 4. थोक मूल्य विधि   |

**साधारण विधि (Simple Method ):**

केवल नकद विक्रय करने वाली शाखाये नकद एवं उधार विक्रय करने वाली शाखाये बीजक मूल्य पर माल भेजना साधारण एवं असाधारण आश्रित शाखा का रोकड़ शेष ज्ञात करना शाखा के रहतिए की गणना करना